प्यार के रंग अनेक

A Hindi Novel

Pyar Ke Rang Anek

Dr Ram L Prasad &
Mrs Saroj K Prasad

Colours of Love

The
Child
Our
Hope

प्यार

के

रंग

अनेक

Pyar Ke Rang Anek

COLOURS OF LOVE

प्यार के रंग अनेक

राम लखन और सरोज प्रसाद की कलपित कहानी

हमारे समाज के लैला मजनू, श्री फरहाद, हीर रांझा, राधा कृष्ण और सीता राम के प्यार के जमाने से आज के प्यार करने वालों में एक अजीब सी अंतर देखने को मिलती है। तब के प्यार में एक ही रंग रहता था जो प्यार करने वालों के सामने झलकता रहता था। उसे न तो नापा जा सकता था और न ही तौलने की जरूरत थी। उस मे जहां सचाई थी वहीं उस मे

तमाम अच्छाईयां भी भरी पड़ी थी । वासना का तो नामों निशान भी नहीं नज़र आता था । शायद उसी प्यार को कवियों ने पवित्र प्यार का नाम दे रखा है ।

पर हमारे आज के युग के प्यार में कई रंग दृष्टिगोचर होते हैं । हमारे आज के युग के प्यार में जहां गहराई तो देखने को मिलती है पर वहीं एक छीछलापन भी है, वासना छिपी होती है, स्वार्थ नज़र आता है और यह आज का प्यार पहले के तरह जनम जनमान्तर का रिशता नहीं रहता है । कभी नरम, कभी गरम, कभी झगड़ा, कभी मिलन तो कभी जुदाई तो कभी अल्प कालीन समझौता भरा होता है । इसी लिये हम अपने आज के प्यार मे अनेक रंगों को महसूस करने लगे हैं । कहीं पवित्र प्यार के झलक देखने को मिलते हैं तो कहीं

वासना और स्वार्थ से भरा प्रेम लोगों के जीवन को नेस्तानाबूत करने को तुला होता है।

प्रेम कर के आज के नौजवान और नवयुवतिया विवाह तो कर बैठते हैं पर थोड़े ही दिनों में परिवारिक झंझट शुरू हो जाते हैं तथा अब समाज में लगभग पचास प्रतिसद विवाहित लोग अलग अलग राहों पर चल रहे हैं। उन के बच्चे बिलख रहे हैं बिगड़ रहे हैं और या तो किसी अन्य परिवार के सदस्य के सहारे जी रहे हैं या तो एक ही पहिये के सहारे चल रहे हैं। कहीं पिता का प्यार नहीं मिलता तो कहीं मां के आंचल, परवरिश और दुलार से दूर हो जाते हैं।

हमारे समाज में अब श्रेष्ट आचरण जैसे रह ही नहीं गया है। परिवर में आपसी समझ बूझ बहुत कम होने लगी है। बहुत चिड़चिड़ापन

आने लगा है । छोटे छोटे बातों को ले कर नये युग के लोग उन बातों को बतंगढ बना लेते हैं ।

यह २०११ के जून महीने के जाड़े की समय की जिक्र है जब हम ने एक लाल तूल में लपेटे हुये केसर कुमकुम से शोभित सूखे नारियल को ब्रिसबन नगर के स्टोरी ब्रिज के ऊपर से नदी में फेंका था । सोमवार को सुबह के छः बज चुके थे और उस दिन उस पुल पर एक अजीब सी सन्नाटा छाई हुई थी । पर जैसे ही हम ने उस नारियल को नदी में गिराया कि ना जाने कहां से एक सुबह सुबह व्ययाम के बहाने सड़क पर दौडने वालो की भीड़ वहां पहुँच गई ।

उन दौड़ने वालो ने मुझे उस बेतुकी समय पुल पर अकेले खड़े देख कर घबरा गये और सब वहीं चुपचाप खड़े हो गये । वे शायद मुझे उस पुल पर से कूद कर आत्म हत्या करने से बचाने की सोच रहे थे । पर जब उन को यह

लगा कि मैं ऐसा कुछ नहीं करने जा रही थी तब वे चुपचाप अपने रास्ते पर दौड़ते चले गये । मैं वहीं खड़ी सम्भवता अपने भविष्य के बारे में सोचने लगी ।

अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने के विश्वास को ले कर मैं उस नारियल को ब्रिसबन नदी में फेंका था । पर वहां लगभग एक घण्टे तक सबर करने के बावजूद भी जब कोई अजूबा नहीं हुआ तथा कोई चमक दमक या झलक नहीं नज़र आई तब मैं निराश हो कर अपने घर चली आई थी ।

हां मेरे गुरू के इस व्यवस्था से इतना जरूर हुआ था कि उन गोरों के देश में मेरे जैसी काली हिन्दुस्तानी युवती के जीवन में और भी अंघकार छाने लगी थी । यह सब कैसे हुआ मैं आप को जरूर बताऊँगी पर सबर कीजिये ।

धीरे धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होये ।

माली सींचे सौ घड़ा ऋतु आये फल होये ।

अभी कुछ दिनों की ही बात है जब मैं अपने भारत से एक नये नये आये हुये गुरू पुरोहित आत्माराम के पास गई थी अपने जीवन के भविष्य के विकासहीनता या स्थिरता को दूर कराने के उपाय खोजने के लिये । उन्हों ने हमें यह लाल तूल से लपेटी केसर कुमकुम लगी नारियल को देते हुये कहा था कि जैसे ही यह तिल्लसमी नारियल को जल प्रवाह किया जायेगा वैसे ही हमारे जीवन की भविष्य की स्थिरता दूर हो जायेगी और मैं एक बहुत ही उन्नति करने वाली व्यक्ति बन जाऊँगी ।

हम हिन्दू लोग भी बड़े मूरख हैं जो अपने पंडितों की कोई भी बेबुनियाद बात मानने के

लिये बिना ठीक से सोचे समझे तैयार हो जाते हैं फिर बाद मे पछताते हैं । ऐसे ही अंधविश्वास पर हमारे धर्म के ठेकेदारों ने हम को पागल बना कर सदां लाभ उठाया है और हम उन के बातों मे फंसते जाते हैं ।

मेरे लिये वह एक ऐसी मनहूस दिन थी जब सब तरफ से सभी तरह के जोखिम बौछार मेरे ही तरफ आ रहे थे । मानो मेरे ऊपर पूरा आसमान ही टूट कर गिर पड़ा था । मेरी अजीज़ सहेली अमरा का अचानक देहान्त हो गया था और मेरे वकीली पेशे में कई नये शरतनामो के प्रति बड़ी हलचल सी मची हुई थी ।

मैं ने अपने दफतर के मुखिये मनोज महेरा से सरदर्द का बहाना कर के अपने घर के लिये जल्दी ही चलने को तैयार हो गई थी । मेरे बोस ने मुझे दो एसप्रिन ले कर आराम करने को

कहा था पर मैं ऐसा कुछ नहीं करने वाली थी कयोंकि मेरी सरदर्द केवल मेरी एक घर जल्दी जाने की बहाना थी । आज कल मेरे लिये ऐसे बहाने बना कर काम से छुट्टी लेना मेरी आदत सी बन गई थी ।

इसी लिये अब मैं दो दुनियों में रहने लगी थी जहां पर एक तरफ कानून की वासत्विकता थी और दूसरे तरफ नकली तथा बनावटी रंगरूप थे । मैं ऐसे ही कस्मोकश में अपना जीवन बिता रही थी इसलिये ना ही अपने वकीली पेशे में पूरे तौर से दिल लगा कर काम कर सकती थी और ना ही अपने संगीत कला के शौक को सही रकम से कर पा रही थी । घर के काम काज को तो कहना ही कया था ? अगर मेरे मां बाप की छत्रछाया मेरे सर पर ना होता तब मैं तो कब की टूट गई होती ।

मैं ने जैसे अपना कोट उठाया और घर जाने को दरवाजे पर पहुँची की मनोज ने मुझे बताया की हिन्दुस्तान के गज़ल के शहनशाह जगजीत सिंह अगस्त में ब्रिसबन आ रहे हैं। उस ने यह भी कहा कि हमें उस के लिये तैयार रहना था कयोंकि उस ने दो टिकटों को ले रखा था।

न जाने कयों मनोज आज कल मेरे लिये इतना खास फिकर करने लगा था। वह नौजवान था, तनदुरुस्त था, देखने में किसी बोलीउड के कलाकार से कम नहीं था। फिर काली होते हुये भी मेरी सकल सूरत देखने मां सुन्दर थी। अगर हम दोनो के बीच कुछ बात बन जाये तो कया खराबी हो सकती थी। पर मेरे तरफ से ऐसा कुछ नहीं होने वाला था।

ओफिस में कल लौटने की वादा कर के मैं चलती बनी। टुओंग सटेशन से रेलगाड़ी पकड़ कर मैं अपने घर गुडना के लिये चल पड़ी।

गाड़ी के डिब्बे में लोगो की भीड़ थी पर मुझे एक बूढ़ी महिला के पास वाले सीट पर जगह मिल गई । मुझे बैठते ही वह गोरी बूढ़ी अपने सीट से खसक कर दूसरे डिब्बे में चली गई जैसे मैं उस के लिये कोई छूत की बीमारी थी ।

अब तो मेरे लिये एक और आफत खड़ी हो गई थी । मेरी सहेली अमरा की अचानक मौत, मेरी बहन नयना का घर से चले जाना, मेरे दफतर की हलचल, घर में पुराने खयाल के मां बाप की डांट डपट और नुखता चीनी तथा अब सफर करते समय लोगो की एक काली युवती के प्रति घृणित व्यवहार, जातिये भेदभाव का प्रदर्शन । मेरा तो दिल ही बैठा जा रहा था ।

कया यही मेरे जीवन का आधार है ? मैं ने तो बचपन से ही मेहनत कर के, कई छात्रबृतियां जीत कर मन लगा कर पढ़ लिख कर आज एक सफल वकील बन गई थी । पर कया

केवल यही हमारे जीवन की सच्चाई है ? मैं भी कोई लता मंगेशकर, अनुराधा पोडवाल या अलका यागनिक के तरह एक सफल संगीतकार बनना चाहती हूँ लेकिन मेरे तकदीर में शायद ऐसा होना ही नहीं लिखा है। बचपन में गरम दाल की हण्डी मेरे ऊपर गिर जाने से जल कर मेरे जांघ में जो अमिट चिन्ह बन गये थे वे तो मेरे लिये एक असहाय पीड़ा के तरह चुभ रहे थे। आज वे ही जैसे मेरे लिये एक अभिसाप बन बैठे हैं।

मैं यह ठीक से जानती हूँ कि जिन्दगी बहुत छोटी है वह सब चीज़ करने को जो हर इनसान की खवाहिश होती है फिर भी कोशिश करने में कया बुराई है। मेरी एक सफल गाईका बनने की लाख कोशिशें बेकार होती जा रही थी कयोंकि हमारे अपने लोग मुझे ऐसा करने से मज़बूर कर रहे थे।

मेरे माता पिता ने मुझे पढ़ा लिखा कर यहां तक इसलिये पहुँचा दिया था जिस से मैं उन के बुढ़ापे का सहारा बन सकूं । बे एक घर जमाई के खोज में लगे रहते थे और हर रोज मेरा दिमाग चाट चाट कर मुझे मजबूरन अपने चुने हुये नौजवानो की तस्वीरें दिखा दिखा कर मेरी रज़ामंदी चाहते थे ।

कभी मेरे पिता के किसी दूर के दोस्त के पहचान के लड़के की तस्वीर शाम को मेरे सामने रख दी जाती थी तो कभी मेरे मां की बहन की सिफारिश वाले नौजवान की चित्र सुबह सुबह ही मेरे आंखों के सामने ला दी जाती थी । मुझे समझाया जाता था कि वे सब नौजवान बड़े ही ऊंचे खानदान के हैं, धनी घर के हैं और बहुत ही पढ़े लिखे हैं । पर मेरी दिलचस्ती इन में से किसी मे भी नहीं हो रही थी ।

अभी पिछले सप्ताह मेरी मांता जी ने हमारे सामने तीन चुने हुये जवानो की तस्वीर पेश किये थे । उन मे से एक तो डाकटर था, दूसरा एक वकील था और तीसरा एक अकाउंटन्ट ठहरा जिन मे से हम को किसी एक को अपना जीवन साथी चुनने को कहा जा रहा था । चुनाव कर लेने के बाद मुझे उस के साथ मेल जोल बढ़ाने के लिये अग्रसर किया जायेगा जिस से हम दोनो की पहचान हो जाये ।

इस बीच एक अजीब अवसर मेरे सामने आया जब मेरे एक कोलेज के साथी ने मेरे सामने अपने प्यार का इजहार जाहिर किया । मेरे इस साथी के बारे मे मेरे मां बाप को कोई खबर नहीं थी और अगर उन को मेरे इस प्रेमी रोय जेनिंगस के बारे में कुछ भी सुकसुकी हो गई तो गजब हो सकता था । पिता जी को दिल की दौरा हो सकती थी और मेरी मां तो अपनी

छाती पीट कर दहाड़ मार कर चीखने रोने का नाटक करने लगती ।

दुखः तो इस बात की थी कि अगर उन को रोय के बारे मे जरा भी खबर हो जातौ तो मेरा भी वही हाल होता जो मेरी बड़ी बहन नयना के साथ हुआ था । नयना को मजबूरन अपने खुद चुने हुये प्रेमी के साथ घर छोड़ कर भाग जाना पड़ा था तथा आज तक उस से मेरे घर के किसी सदस्य ने ना तो बात चीत की थी और ना ही उस की कोई खबर रखी गई थी । यह सिर्फ इस लिये कि उस का प्रेमी एक गैर हिन्दू था । एक पढ़ा लिखा आग्रेज नौजवान था ।

शायद इसी डर से मैं ने रोय को कोई जवाब नहीं दे सकी थी जब उस ने मुझ से शादी करने को कहा था । सवाल मेरा रोय के प्रति कितना प्यार का होना नहीं था पर असमंजस इस बात की थी की मैं कैसे अपना फैसला दूं यह जानते

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below